कला और पारिस्थितिकी

अभिषेका कृष्णगोपाल

विद्यार्थियों को प्रकृति के महत्त्व के बारे में समझाने के लिए कला एक सशक्त माध्यम है, क्योंकि यह उनको सोचने और अनुभव करने के लिए प्रेरित करती है। यह लेख कुछ सरल कला आधारित गतिविधियों में ऐसी सम्भावनाएँ तलाशता है जिनके उपयोग से बच्चों को उनकी स्थानीय पारिस्थितिकी और पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाया जा सके।

प्रकृति से हमारा बढ़ता हुआ अलगाव एक महत्त्वपूर्ण कारण है जिसके चलते मनुष्य अपने पर्यावरण पर कई प्रतिकूल प्रभाव अनुभव करता है। अतः अब यह व्यापक रूप से माना जाता है कि अधिक टिकाऊ जीवन के लिए हमें ऐसे शैक्षणिक अनुभव निर्मित करने होंगे जो बच्चों में प्राकृतिक जगत के प्रति अधिक संवेदनशीलता और आदर (appreciation) का भाव विकसित कर सकें।

अधिकांश राष्ट्रीय और राज्य शिक्षा मण्डल, इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए अपने विद्यालयीन पाठ्यक्रम में पर्यावरण शिक्षा को अध्ययन का अनिवार्य हिस्सा बना रहे हैं। यद्यपि कई कारणों से ऐसा प्रतीत होता है कि इन बातों का सीखने वाले बच्चों के मस्तिष्क पर बहुत कम प्रभाव होता है। पर्यावरण शिक्षा के पाठ्यक्रम पर्यावरण प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग, ओजोन परत क्षति इत्यादि जैसे विषयों पर केन्द्रित होते हैं, जिनसे विद्यार्थी आसानी से सम्बन्ध स्थापित नहीं कर पाते। अधिकांश शिक्षक और विद्यार्थी पढ़ाने (और सीखने) के अतिशय बोझ से लदा हुआ अनुभव करते हैं चूँकि अन्य विषय भी पाठ्यक्रम में पहले से ही समाहित होते हैं। अतः प्रायः यह 'विषय' उपेक्षित रहता है या इसे किसी अन्य विषय की भाँति ही अध्ययन किया और 'याद रखा' जाता है ताकि परीक्षा में उत्तीर्ण हो सकें। स्वाभाविक रूप से ऐसा

> ...अधिक टिकाऊ जीवन के लिए हमें ऐसे शैक्षणिक अनुभव निर्मित करने होंगे जो बच्चों में प्राकृतिक जगत के प्रति अधिक संवेदनशीलता और आदर का भाव विकसित कर सकें।

प्रतीत होता है कि पर्यावरण शिक्षा के लिए उपयोग की जाने वाली शिक्षण विधियों का अध्ययनरत विद्यार्थियों के मस्तिष्क पर बहुत कम प्रभाव होता है। इसके विपरीत, विद्यार्थियों के लिए यह आवश्यक है कि वे केवल हमारे प्राकृतिक जगत के वैज्ञानिक तथ्यों को ही न जानें बल्कि प्रकृति के प्रति उनकी संवेदनशीलता बढ़े और वे पर्यावरणीय मुद्दों को उनके क़रीबी परिवेश में समझ सकें। ऐसा करने के लिए हमें उन विधियों और माध्यमों के साथ प्रयोग करने और सम्भावनाएँ तलाशने की ज़रूरत होगी जो बच्चों को प्राकृतिक जगत के प्रति जागरूक बनाएँ और उनमें संवेदनशीलता का पोषण करें।

सम्पूर्ण मानव इतिहास में कला और शिक्षा

एक-दूसरे से सम्बन्धित रहे हैं। वास्तव में प्रायः ज्ञान का प्रसार कला के माध्यम से हुआ है। मगर अब दुनिया की कई शिक्षण पद्धतियों में इन दोनों को बिलकुल अलग-अलग कर दिया गया है। शिक्षण साधन के रूप में कला का उपयोग करने से बच्चे सोचने, और अनुभव करने के लिए प्रेरित होते हैं तथा वे और अधिक संवेदनशील बनते हैं। प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता कई प्रकार की कला प्रेरित गतिविधियों के द्वारा भी प्राप्त की जा सकती है, विशेष रूप से जब हम प्रकृति के बहुत क़रीब काम करें। वास्तव में जब बात प्राकृतिक जगत की समझ बनाने की हो तो कला के पास वह सामर्थ्य है जिसका पारम्परिक शिक्षण तरीक़ों में अभाव है।

कला के उपयोग से बच्चों को प्रकृति के बारे में अध्ययन करवाने के लिए व्यक्ति का कला में प्रशिक्षित या विषय विशेषज्ञ होना आवश्यक नहीं है। जिज्ञासु, खोजी और रचनात्मक बुद्धि वाले व्यक्ति कला के माध्यम से प्रयोग कर, कला आधारित नवीन गतिविधियों का निर्माण कर सकते हैं। विद्यालयीन शिक्षक कुछ कला आधारित सरल गतिविधियों द्वारा आसानी से पारिस्थितिकीविज्ञान और पर्यावरण को पढ़ा सकते हैं। ज़रूरी नहीं है कि यह गतिविधियाँ बहुत जटिल या अत्याधिक रचनात्मक हों। सरल प्रयोग भी बच्चों के सीखने की गुणवत्ता में अन्तर ला सकते हैं। इस लेख में हम ऐसी कुछ सरल गतिविधियों और प्रयोगों को जानेंगे, जिनका उपयोग बच्चों को उनके पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाने के लिए किया गया है।

कला के माध्यम से अवलोकन आत्मविश्वास बढ़ाता है!

कला के माध्यम से बच्चों को प्राकृतिक जगत के बारे में पढ़ाने के लिए एक प्रयोग विद्यार्थियों के साथ बाघ संरक्षित क्षेत्र की तलहटी में संचालित किया गया। कला आधारित गतिविधियों की शुरुआत करने से पहले हमने एक प्रश्नावली आधारित सर्वेक्षण किया ताकि विद्यार्थियों के स्थानीय जैवविविधता से सम्बन्धित औसत ज्ञान का आकलन किया जा सके। सर्वेक्षण से प्राप्त निष्कर्ष आश्चर्यचकित करने वाले थे। हमें ज्ञात हुआ कि ये विद्यार्थी उनके घर के

कला के उपयोग से बच्चों को प्रकृति के बारे में अध्ययन करवाने के लिए व्यक्ति का कला में प्रशिक्षित या विषय विशेषज्ञ होना आवश्यक नहीं है। जिज्ञासु, खोजी और रचनात्मक बुद्धि वाले व्यक्ति कला के माध्यम से प्रयोग कर कला आधारित नवीन गतिविधियों का निर्माण कर सकते हैं।

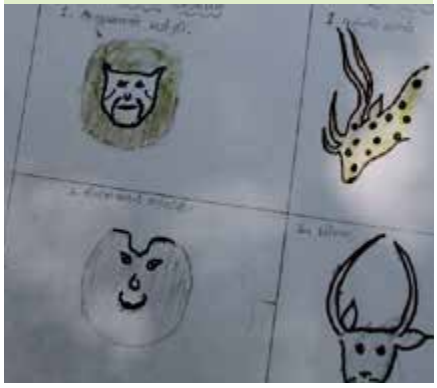

चित्र-1 : चित्रांकन ने बच्चों को अपरिचित जानवरों में अन्तर करने वाले लक्षणों को याद रखने में मदद की।
Credits: Abhisheka K. License: CC-BY-NC.

आँगन में पाई जाने वाली वन्य जीवन की विविधता से अनभिज्ञ थे। यद्यपि यह एक आदर्श स्थिति होती कि विद्यार्थियों को जंगल में ले जाकर उन्हें वन्यजीवों के बारे में कुछ प्रामाणिक अनुभव दिए जाते, लेकिन ऐसा करने के लिए अनुमति प्राप्त करना सम्भव नहीं था। इसके बजाय विद्यार्थियों को कक्षा अध्यापन सत्र में ही कला का उपयोग करते हुए वन्यजीवों को पहचानने का प्रशिक्षण देने का प्रयास किया गया। विद्यार्थियों को बाघ संरक्षित क्षेत्र में पाए जाने वाले अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्तनपायी जीवों के चित्र दिखाए गए, और उन्हें एक ही कुल में पाई जाने वाली विभिन्न प्रजातियों में भेद करने को कहा गया। उन्हें दो समूहों में बाँटा गया। एक समूह को केवल चित्रों को देखने का कार्य सौंपा गया, और दूसरे समूह को उन विभिन्न प्रजातियों के बीच अन्तर चित्रांकित करने को कहा गया, जिन्हें वे देख रहे थे। चूँकि जंगल में पाँच प्रजातियाँ नरवानर (primates), दो बड़ी बिल्लियों (big cats), और तीन प्रजातियाँ खुरधारियों (ungulates) की थीं, अत: बच्चों को प्रत्येक प्रजाति के बीच अन्तर करने के लिए उनके मुख्य लक्षणों को जानना और याद रखना आवश्यक था। कार्यशाला के पश्चात किए गए सर्वेक्षण के निष्कर्ष बताते हैं कि उन विद्यार्थियों का ज्ञान स्तर अपेक्षाकृत उच्च था जिन्होंने स्तनपायी जीवों के चित्र

चित्र-2 : कक्षा से बाहर चित्रांकन करने का उत्साह।
Credits: Abhisheka K. License: CC-BY-NC.

बनाए, बजाए उन विद्यार्थियों के जिन्होंने केवल चित्र देखे। चित्रांकन ने विद्यार्थियों को उन जानवरों के लक्षण भी याद रखने में मदद की जो उनके लिए अपरिचित थे। ज्ञान के स्तर में यह वृद्धि उन छात्राओं में भी महत्त्वपूर्ण रूप से देखी गई जिन्होंने चित्रांकन का चयन किया। यह इस बात को प्रदर्शित

करता है कि कला उन बच्चों के लिए एक उपयोगी साधन हो सकती है जिनको बाहर समय व्यतीत करने के सीमित अवसर प्राप्त होते हैं, ख़ासतौर पर उन गाँवों में जहाँ एक उम्र के बाद लड़कियों को घर के अन्दर ही रखा जाता है।

इसी प्रकार यह देखने के लिए बच्चों का परीक्षण किया गया कि वे वृक्षों की विशेषताओं को भली-भाँति केवल देखकर याद रख सकते हैं या उनके चित्र बनाकर। प्रत्येक कक्षा दो समूहों में बाँट दी गई। एक समूह को उनके विद्यालय परिसर में उगे हुए वृक्षों के अवलोकन के लिए कहा गया जबकि अन्य को विभिन्न भागों जैसे अवलोकन किए गए प्रत्येक वृक्ष की पत्तियों, फलों और फूलों के चित्र बनाने के लिए कहा गया। उन्हें प्रोत्साहित किया गया कि वे मोम रंगों (क्रेयोन्स) का उपयोग कर काग़ज़ पर वृक्षों की छाल की छाप लेकर उनके विन्यास (पैटर्न) का अध्ययन करें। दोनों समूहों द्वारा किए गए अवलोकनों को दी गई डेटा शीट्स में अंकित किया गया। इस गतिविधि के बाद यह स्पष्ट हुआ कि जिन्होंने अवलोकन किए गए वृक्षों का चित्रांकन किया था वे पत्तियों के आकार या छाल के भेद को बेहतर तरीक़े से और लम्बे समय तक याद रख पाए। मैदान में बनाए गए चित्रों की मदद लिए बिना वे पत्तियों और फलों के चित्र ब्लैकबोर्ड पर बनाने में भी सक्षम रहे। यह भी देखा गया कि जब बच्चों को इस गतिविधि के लिए पेड़ों का चयन करने को कहा गया तो केवल अवलोकन करने वाले विद्यार्थियों ने उन पेड़ों का चयन किया जिनसे वे पहले से परिचित थे जैसे इमली, बरगद या पपीते के पेड़। ये बच्चे अपने अवलोकनों को याद रखने के प्रति पूरी तरह आश्वस्त नहीं थे अत: उन्होंने ऐसे पेड़ों का चयन किया जिनका उन्हें पूर्वज्ञान था। इसके विपरीत जिन विद्यार्थियों को अवलोकनों के चित्रांकन हेतु कहा गया था उन्होंने सामान्यतया अपरिचित वृक्षों का चयन किया। कला ने नए पेड़ों के विभेदक लक्षण खोजने और समझने के उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने में सहायता की जिसकी बदौलत उनके ज्ञान स्तर में भी वृद्धि हुई।

इसी प्रकार चित्रांकन का उपयोग चिड़ियों, कीटों और जीवन के विभिन्न रूपों को पहचानना सीखने के लिए किया जा सकता है। यद्यपि प्राकृतिक परिभ्रमण विद्यार्थियों को उन जीवन रूपों को देखने में मदद करता है जिन्हें वे पहले अनदेखा कर चुके होते हैं, चित्रांकन उन्हें बारीक़ी से देखने और उन्होंने

चित्र-4 : आदिवासी विद्यालय के माध्यमिक विद्यार्थियों के समूह द्वारा प्रकृति-प्रेरित कला।
Credits: Abhisheka K. License: CC-BY-NC.

चित्र-3 : घास की पत्ती के नीचे छुपा हुआ, चींटी का घोंसला चित्रित करते हुए।
Credits: Abhisheka K. License: CC-BY-NC.

इन अवलोकनों से क्या सीखा है उसे याद रखने में मदद करता है। उदाहरण के लिए जब ग्रामीण विद्यार्थियों के एक समूह को जन्तुओं के घर ढूँढ़ने और उनका चित्रांकन करने की चुनौती दी गई तो विद्यार्थियों ने विभिन्न जन्तुओं के घरों और इन्हें बनाने वाले जन्तुओं (यदि वे मौजूद हों तो) की विशेषताओं का अवलोकन करने में लम्बा समय व्यतीत किया। इनका चित्रांकन करने के लिए विद्यार्थियों ने बहुत सावधानी बरती और उन्होंने घरों की कुछ बहुत ही बारीक विशेषताओं पर ध्यान दिया। इन बारीकियों को वे नज़रअन्दाज़ कर सकते थे यदि वे

प्रकृति-प्रेरित कला विद्यार्थियों के ऐसे मानसिक अवरोधों को समाप्त कर उन्हें प्राकृतिक सामग्री के साथ किसी विशिष्ट अन्तिम उत्पाद को पाने की उम्मीद के बिना कार्य करने में मदद करती है। इसमें बच्चों का कला के साथ जुड़ने का अनुभव महत्त्वपूर्ण है न कि यह कि किया गया कलात्मक कार्य पूर्णता पर कैसा दिखता है।

प्राकृतिक परिभ्रमण में सरसरी तौर पर इन घरों का अवलोकन करते।

इस गतिविधि का संचालन विद्यालय परिसर में भी किया जा सकता है। शिक्षक विद्यार्थियों को जन्तुओं के घर देखने के लिए कह सकते हैं।

उनका ध्यान इस ओर भी खींचना चाहिए कि कैसे मकड़ियों के जाले या ततैया (बर्र) के छत्ते भी इन्हीं के उदाहरण हैं। यह बात बच्चों को केवल चिड़ियों के घोंसले पर ही ध्यान केन्द्रित करने से रोकने में मदद करेगी, जैसा कि प्राय: अधिकांश बच्चे करते हैं। शिक्षकों को विद्यार्थियों को जन्तुओं के खोजे गए घरों के अवलोकन और चित्रांकन करने के लिए पर्याप्त समय देना चाहिए। सत्र के अन्त में इस गतिविधि के दौरान बनाए गए चित्रों का प्रदर्शन किया जा सकता है और इनका उपयोग करके एक चर्चा शुरू की जा सकती है जिसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना हो कि पूरा समूह विभिन्न प्रकार के जन्तुओं और उनकी घर बनाने की कला को समझे। इस समूह चर्चा का उपयोग, इन जन्तुओं की अपनी अलग विशिष्टताओं, घर बनाने की उनकी ज़रूरतों और ख़तरे जिनसे ये घर उनका बचाव करते हैं आदि को स्पष्ट करने के लिए भी किया जा सकता है।

चित्र-5 : रैली गाँव, कलिम्पोंग में विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए चिड़ियों के घोंसले।
Credits: Abhisheka K. License: CC-BY-NC.

प्रकृति-प्रेरित कला को प्रोत्साहन

प्रकृति-प्रशिक्षक के रूप में अपने अनुभवों के दौरान मुझे कई बार ऐसी स्थितियों का सामना करना पड़ा जब विद्यार्थियों को चित्रांकन करने में संकोच हुआ। शिक्षकों और अभिभावकों का सुन्दर दिखने वाला कलात्मक कार्य करने का दबाव, कलात्मक कार्य का इस तरह मूल्यांकन करना कि वह बनाई गई वस्तु से कितना अधिक मेल खाता है, और ऐसे ही अन्य कारण कई बच्चों को

चित्र-6 : रैली गाँव, कलिम्पोंग में बेकार गत्ते के बक्सों का उन्नयन चक्रण।
Credits: Abhisheka K.
License: CC-BY-NC.

कला से जुड़ने तथा उनकी रचनात्मकता की खोज करने को हतोत्साहित करते हैं। प्रकृति-प्रेरित कला, विद्यार्थियों के ऐसे मानसिक अवरोधों को समाप्त कर उन्हें प्राकृतिक सामग्री के साथ किसी विशिष्ट अन्तिम उत्पाद को पाने की उम्मीद के बिना कार्य करने में मदद करती है। इसमें बच्चों का कला के साथ जुड़ने का अनुभव महत्त्वपूर्ण है न कि यह कि किया गया कलात्मक कार्य पूर्णता पर कैसा दिखता है।

उन विद्यालयों में जहाँ बच्चों को कभी भी चित्रांकन का अवसर नहीं दिया जाता, बच्चों में चित्र बनाने और रंग भरने को लेकर एक भय रहता है। ऐसे प्रकरणों में, सीमित समयावधि में मैंने प्राकृतिक पदार्थों से कलाकारी करने को प्राथमिकता दी। इस तरह विद्यार्थी केवल पेंसिल, काग़ज़ और रंगों का उपयोग करने तक ही सीमित नहीं रहे बल्कि उन्होंने प्राकृतिक जगत के विभिन्न रंगों और बनावटों का उपयोग करना सीखा। जब विद्यार्थियों को अपने प्राकृतिक परिवेश से कला निर्माण कार्य के लिए सामग्री एकत्रित करने को कहा गया तो उनके लिए प्रकृति प्रदत्त सभी विकल्प खुले थे - कीचड़ और पत्थरों से लेकर पत्तियाँ, बीज, फल और लकड़ी के टूटे टुकड़े, सूखी घास, मरे हुए कीड़े और क्या नहीं! अचानक उन्होंने प्रकृति में कई नई चीज़ें खोजीं जिन्हें उन्होंने पहले कभी देखने की कोशिश नहीं की। उन्हें उन सभी वस्तुओं को अपने हाथों से अनुभव करने का अवसर भी मिला। विद्यार्थियों को बिना किसी विशेष विषयवस्तु के कलाकृति बनाने के अवसर प्रदान करना, उन्हें स्वयं की रचनात्मकता को खोजने की स्वतंत्रता का अनुभव करने में सहायक होता है। वे बिना किसी रोक-टोक के रंगों, बनावट और आकृति (डिज़ाइन) के साथ खेलना सीखते हैं और इस प्रक्रिया में कुछ अद्वितीय कलाकृतियों का निर्माण करते हैं! चूँकि कला के ये कार्य प्राकृतिक रूप से अल्पजीवी हैं अत: ये पृथ्वी में बिना

चित्र-7 : पानी और शैम्पू की ख़ाली बोतलों से बनी लटकनें। इन्हें उन जन्तुओं के चित्रों से सजाया गया है जिनसे प्राय: लोग डरते हैं या जिन्हें अपशकुन मानते हैं।
Credits: Abhisheka K. License: CC-BY-NC.

किसी हानिकारक प्रभाव के पुनर्चक्रित होते हैं, और बच्चे प्रकृति को एक अलग नज़रिये से देखने का अनुभव अपने साथ ले जाते हैं। प्राकृतिक जगत से अपने सम्बन्ध विकसित करने या सुधारने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करने का यह एक सुखद तरीक़ा है।

पर्यावरणीय जागरूकता

पर्यावरणीय सन्देशों को साझा करने और अपने गाँव/शहर/कस्बों के विशिष्ट, गम्भीर पारिस्थितिक मुद्दों के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए कला को एक माध्यम की तरह उपयोग किया जा सकता है।

स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र सुधारने में विद्यार्थियों की भूमिका के प्रति उन्हें जागरूक करने में भी कला आधारित गतिविधियों का उपयोग किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, मैंने गाँव के कुछ विद्यार्थियों से पूछा कि आप में से किन-किन को चिड़ियों के घोंसले नीचे गिराने की आदत रही है? फिर मैंने विद्यार्थियों को घास और पत्तियों जैसी सामग्री इकट्ठी करने को कहा, जिन्हें उन्होंने चिड़ियों को अपने घोंसले का निर्माण करने के लिए उपयोग करते हुए देखा था। इसके बाद उन्हें किसी भी तरह इस सामग्री का इस्तेमाल करके ऐसे घोंसले बनाने थे जिनमें अण्डे टिक सकें। इस अभियान पर घण्टों काम करने के बाद कुछ विद्यार्थी इस तरह के घोंसले बनाने में सफल रहे जो कि पर्याप्त मज़बूत थे और आवश्यक मानकों को पूरा करते थे। यद्यपि कुछ अन्य के घोंसले लटके हुए-से थे। इस साधारण-सी गतिविधि ने विद्यार्थियों को यह अनुभव करवाने में मदद की, कि वे क्षणभर में घोंसलों को नष्ट कर सकते हैं मगर चिड़िया को इसे बनाने के लिए बहुत समय लगता है और कठिन प्रयास करना पड़ते हैं। जब विद्यार्थियों से कहा गया कि जो घोंसले उन्होंने कठिन परिश्रम के साथ बनाए हैं, उन्हें इस गतिविधि

के बाद फेंक दिया जाएगा तो यह सुनकर वे घबरा गए और उन्होंने ख़ुद से ही ये वादा किया कि वे फिर कभी चिड़ियों के घोंसले नहीं तोड़ेंगे।

अपशिष्ट प्रबन्धन एक अन्य महत्त्वपूर्ण मुद्दा है जिसके बारे में बच्चों को जीवन में जितना जल्दी बता दिया जाए उतना ही अच्छा होगा। कला का इस सन्दर्भ में कुछ अलग तरीक़े से उपयोग किया गया। उदाहरण के लिए एक विशिष्ट सत्र अपशिष्ट प्रबन्धन, अपशिष्ट के अवनयन और पुनर्चक्रण व कम्पोस्ट खाद तैयार करने की चर्चा से शुरू होकर धीरे-धीरे कला के उपयोग से फेंके गए अपशिष्ट के उन्नयन चक्रण (अप-साइक्लिंग) तक पहुँचा। इसके बाद बच्चों से कहा गया कि वे अपने घर से फेंके हुए पदार्थ लेकर आएँ और उन्हें उपयोगी पदार्थों में बदलें। अपशिष्ट पदार्थ का एक ख़ूबसूरत उपयोगी पदार्थ में बदल जाना विद्यार्थियों के लिए हमेशा बहुत प्रेरक होता है और ये उन्हें किसी भी वस्तु को फेंकने के पूर्व बड़ी सावधानी से सोचने के लिए विवश करता है।

निष्कर्ष

भारतीय संस्कृति में कला के कई और रूप - साहित्य, कविता और संगीत से लगाकर नृत्य, मूर्तिकला और रंगमंच सभी - समाहित हैं। और इन सबका उपयोग, बच्चों में 'प्रकृति' से उनके सम्बन्ध की समझ व जागरूकता का भाव विकसित करने में मदद करने वाले साधनों के रूप में किया जा सकता है। उदाहरण के लिए प्रस्तुतिकरण कला (परफार्मिंग आर्ट्स) अध्यापन की एक बहुत बढ़िया विधा हो सकती है जो प्रकृति संरक्षण की आवश्यकता के बारे में अन्य बच्चों व प्रौढ़ श्रोताओं में जागरूकता फैलाने में अपनी भूमिका का निर्वाह करने हेतु विद्यार्थियों को प्रोत्साहित कर सकती है। कला हमें सबसे अधिक वंचित और हाशिये पर रहने वाले समुदायों में से कुछ तक उस समय पहुँच बनाने में मदद करती है, जब संवाद के अन्य सभी स्वरूप असफल हो जाते हैं।

कला के उपयोग के ज़रिए पारिस्थितिकी अध्यापन के लिए हालाँकि एक शिक्षक के रूप में हमें कुछ संवेदनशीलता, रचनात्मकता और खिलाड़ीपन विकसित करना चाहिए। यह लेख प्रकृति अध्ययन और अध्यापन के 'कुछ' तरीक़ों की सम्भावनाएँ तलाशता है जो इसे और मनोरंजक बना सकें। मैं आशा करती हूँ कि यह आपको अपनी कक्षा में कला को और रचनात्मक तरीक़े से उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

अभिषेका कृष्णगोपाल एक पर्यावरणशास्त्री, कलाकार (दृश्य एवं प्रस्तुति) और प्रकृति-प्रशिक्षक हैं। वे पारिस्थितिकी क्षेत्र के अपने अनुभवों और कला माध्यम का उपयोग प्रकृति संरक्षण बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए करती हैं। शहरी क्षेत्र के निश्चित वन्य प्राणियों और घायल जन्तुओं के पुनर्वास का उनको कई वर्षों का अनुभव है। उनसे abhishekagopal@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** भोलेश्वर दुबे